"खड़े हुए गोमतेश्वर" की है। यह 9वी शताब्दी की है। 'नटराज प्रतिमा' इस जागृति का मूर्त रुप है। इस प्रकार कला मर्मज्ञो का कहना अतिशयोक्ति नही है। कि "भारतीय मूर्तिकला केवल दो कृतियां निर्माण करने में समर्थ हुई। एक तो शान्ति और स्थिरता की अभिव्यक्ति "बुद्ध मूर्ति' दुसरी गति और संस्ति का निर्देशन नटराज मूर्ति"

नटराज की मूर्तियां तांबे और पीतल से ढालकर बनाई गई। 15वी-16वी सदी से लेकर वर्तमान काल तक के इनके उदाहरण मिलते हैं। मद्रास संग्रहालय राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली सिंहल के कोलम्बो संग्रहालय तथा बोस्टन संग्रहालय में ये मूर्तियां प्रसिद्ध हैं। दक्षिण में आज भी प्राचीन शैली के ऐसे मूर्तिकार बच गए हैं। जो वंहा की अच्छी मूर्तियों की प्रतिकृति तैयार कर सकते हैं। सम्भवत: उससे भी उत्तम और प्राचीन उदाहरण मंदिरों में तथा पृथ्वी में दबे पड़े होंगे। सृष्टि और प्रलय का ताण्डव नृत्य संसार के कला क्षेत्र में अद्वितीय है।

तांबे में निर्मित एवं तंजौर तामिलनाडु से प्राप्त "नटराज' की मूर्ति में उदात्त नृत्य में मस्त भगवान नटराज के अंग-२ से गति और स्फूर्ति छिटक रही है। प्रसन्न मुख मंडल ताल का सम देता जान पड़ता है। भगवान की जटा और उदरबंध फहरा रहे है। उनके नागभूषण लहरा रहे हैं। शक्ति का निर्देशक बांया पैर नृत्य की गति में ऊपर उड रहा है। और दाहिना पैर मूर्तिमान तमस मन को कुचल रहा है। इनके चारो हाथों में से सीधे हाथ में सदिन का सूचक "डमरु' डिमक रहा है। और बांये में अन्धकार दूर करने वाली अग्नि दाहक "अग्नि की शिखायें' उठ रही हैं। 'अभय' और 'वरद' की मुद्रा में दो हाथ पल्लव की तरह लहलहा रहे है। जिस प्रकार नाचती हुई फिरहरी की गति जब अपनी पूर्णता को पहुँच जाती हैं। अनेक नटराज की मूर्तियों में आभा मण्डल भी बना है परन्तु इस प्रतिमा में आभा मंडल का अभाव है।

डा० पूर्णिमा वशिष्ठ
ललित कला विभाग

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner

M.F.A - II

1 May-2020

Sub- History of Indian Sculpture-
Code- 2002 T

धातु को ढाल कर मूर्ति बनाने की कला सर्वप्रथम सिन्धु घाटी की सभ्यता से प्रचलित हो गयी थी कांस्य मूर्ति का सबसे प्राचीन और उत्तम उदाहरण मोहन जोदड़ो से प्राप्त नर्तकी का है। जो 2500 ई० पू० की है। यही से प्राप्त कांसे से निर्मित भैंसे की प्रतिमा भी 2500 ई० पू० की है। ईसा पूर्व की पहली दुसरी शताब्दी की शाका कुषाण काल की तक्षशिला से प्राप्त सुन्दर किन्तु कद मे अपेक्षाकृत छोटी मूर्तियां ढाली गयी इसका उदाहरण सिरकप से प्राप्त "बलयाधी छोटे" प्रथम शताब्दी की प्रतिमा है। गुप्तकाल में भी अन्य कलाओं की भांति इस कला ने भी पर्याप्त उन्नति की। वर्तमान मे बरमिंघम संग्रहालय में संग्रहीत 5वी शताब्दी ई० मे निर्मित, बिहार के सुल्तानगंज जिला भागलपुर से प्राप्त बुद्ध की आदमकद मूर्ति 7 फुट ऊँची व एक टन वजनी है। तांबे से निर्मित प्रतिमा के मुख मण्डल पर शान्त एवं गम्भीर भाव दर्शित है।

यहां के संग्रहालय की सबसे महत्वपूर्ण प्रतिमाऐं 7वी 8वी शताब्दी की है। यह लामा तारानाथ द्वारा निर्दिष्ट शिल्प कला का पश्चिमी स्कूल है। अकोता से प्राप्त 8वी शताब्दी की "चामरधारिणी, बडौदा संग्रहालय में सुरक्षित एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

गुप्त शैली से प्रेरित सबसे प्राचीन प्रतिरुप जीवन्तस्वामी और ऋषभनाथ का है। जो बडौदा में है। नालन्दा उत्खनन से प्राप्त कांस्य के शिल्प यहां पर एक सक्रिय स्वतन्त्र स्कूल का आधिपत्य था जिसकी अपनी निजी शैली थी और बृहद भारत के कांस्य के कारखानों को प्रभावित करने में सक्षम है। नालन्दा से प्राप्त 10वी शताब्दी का कांस्य में बुना उत्कृष्ट उदाहरण 'बुद्ध' प्रतिमा है। 8वी - 9वी शताब्दी में नालन्दा से प्राप्त और वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में स्थित है।

गुप्त काल के अन्तिम पड़ाव में नेपाल में भी धातु शिल्पों का निर्माण हुआ। 'अवलोकितेश्वर' 9वी - 10वी शताब्दी का बोस्टन संग्रहालय में संग्रहीत कोमलता व सुन्दरता के साथ गुप्त काल के झीने वस्त्र दर्शाता है।

Scanned with CamScanner